

stehen bringen, festmachen NAIGH. 2, 19 (वधकर्मन्). Nir. 10, 9. 32. धुनि-  
मैतौररम्णात् RV. 2, 15, 5. 12, 2. 5, 32, 1. सुविता युनैः पृथिवीरम्णात् 10,  
149, 1. बृहस्पतिष्ठा सुमे रम्णात् VS. 4, 21. देवं बृहस्पतिं रम् 6, 7. — 2)  
act. med. Jmd (acc.) ergötzen MBh. 3, 1820 (रम्त्येन ed. Bomb., र-  
मयस्तीव INDR. 3, 4). रमते तत्र वै देवो रममाणो गिरिः सुताम् HARIV.  
1576. तस्य कलत्रं रत्तुं समीकृते futuere ČUK. in LA. (III) 37, 3. — 3)  
med. stillstehen, ruhen; bleiben, gern bleiben bei (loc.): अरंस्तु पर्वत-  
श्चित्सरिष्यन् RV. 2, 11, 7. अर्यश्चिदस्मा अरमत्त देवीः 3, 56, 4. 8, 90, 4. 10,  
111, 9. नो अस्मिन्नमते जिनै 145, 4. AV. 1, 17, 3. 5, 22, 9. मयि वो रमतां मनः  
7, 12, 4. 60, 1. 115, 4. 8, 1, 1. कथं वातो नेल्यति कथं न रमते मनः 10, 7, 37.  
रमधं मे वचसे haltet still meiner Rede RV. 3, 33, 5. VS. 3, 21. 5, 17. 8, 51.  
13, 35. AIT. Br. 2, 8. न ह वै गायत्री जमा रमते 3, 39. TS. 3, 4, 2, 5. 5, 2,  
3. 8, 3. CAT. Br. 6, 2, 4, 12. 14. 7, 4, 4, 16. इरत्काले पशवो न रमते PĀNĀV.  
Br. 17, 7, 2. यत्र नार्यस्तु पूष्यते रमते तत्र देवताः Spr. 4772. VARĀH. BRH.  
S. 36, 8. रमते तत्र संपदः Spr. 175. अमितो रम्यताम् (impers.) M. 3, 251.  
— 4) med. (act. nur aus metrischen Rücksichten) stehen bleiben bei so  
v. a. sich genügen lassen an; sich ergötzen —, Gefallen finden an; a)  
mit loc.: वित्ते रमस्व ब्रह्म मन्यमानः RV. 10, 34, 13. ईश्वरो हास्य वित्ते  
देवा अरतोः AIT. Br. 3, 48. WEBER, RĀMAT. Up. 286. स्व एव धामन्नम-  
माणम् BHĀG. P. 2, 9, 16. 4, 14. स्व एव लोके रमतो मद्दामुनेः 4, 4, 19. 5,  
19, 5. न चैकस्मिन्नमत्येताः पुरुषे MBh. 13, 2400. स्वेषु दारिषु रम्यताम्  
(impers.) R. 5, 23, 5. गीति वा रमते CAT. Br. 6, 1, 4, 15. न तेषु (भोगेषु)  
रमते बुधः BHĀG. 5, 22. 18, 36. नाधर्म रम्यते मनः MBh. 1, 4756. 13, 580.  
R. 2, 35, 27. रमते चतुस्तवास्मिन्निरिकन्दरे 96, 5. 3, 53, 20. SUČR. 1, 112,  
18. Spr. 836. 2903. 2972. 3179. 5195. VARĀH. BRH. S. 53, 95. KATHĀS. 21,  
80. 47, 99. 104, 55. BHĀG. P. 2, 1, 7, 9. 2. 9, 9, 44. 20, 12. MĀRK. P. 62, 21.  
वर्यान्धं पतिं यत्र मनस्ते रमते 125, 32. PRAB. 107, 18. BHĀTT. 1, 2. देवत्रा  
रेमे VOP. 7, 98. यत्र वास्य रमेन्मनः M. 2, 223. 4, 175. v. l. Spr. 903. BHĀG.  
P. 5, 14, 32. विप्रयूनि स्वैनेव धनव्ययेन रममाणया DAČAK. in BENF. Chr.  
181, 5. विटेषु रमते (या नारी) Vet. in LA. (III) 20, 12. रत्त sich genügen  
lassend, sich ergötzend, Gefallen findend an, einer Sache ganz ergeben,  
als gewohnter Beschäftigung obliegend: प्राणो CAT. Br. 14, 8, 2, 3. संभू-  
त्याम् 7, 2, 13. प्रियकृति M. 2, 285. 11, 78. BHĀG. 12, 4. MBh. 3, 16621.  
R. 1, 7, 4. 2, 54, 22. 38, 28. 3, 53, 12. 4, 16, 12. Spr. 4839. BRAHMA-P. in  
LA. (III) 48, 15. तेषां (स्रोतसां) चावरणो M. 3, 163. पतिशुश्रूषणो R. 1, 1,  
88. 2, 24, 27. VARĀH. BRH. S. 43, 15. वाजिनो रत्तणो 86, 33. तद्विपन्नस्तुतौ  
RĀŚA-TAR. 3, 503. PĀNĀV. 1, 7, 87. वचने MBh. 3, 2222. व्याकरणो 13, 4303.  
तपसि R. 1, 9, 3. 2, 100, 14. 4, 9, 70. अयसि BHĀTT. 1, 25. यत्र तत्राश्रमे  
Spr. 1225. तथाप्यस्मिन्धोरे पथि बत रता नात्मनि रताः 3035. परंपुंसि  
रता JĀÉN. 2, 280. मिथ्या प्रव्रजिते R. 5, 24, 5. गुरुजने Spr. 1027. स्वा-  
त्मन् (loc.) BHĀG. P. 3, 14, 27. पुंसि 23, 15. स्त्रीषु Vet. in LA. (III) 30, 9.  
परेशे रतमानसाः Verz. d. Oxf. H. 9, a, 3 v. u. Die F. r. ung mit रत  
componirt: वेदवादरत BHĀG. 2, 42. प्रज्ञानुग्रह° R. 1, 1, 2, 24, 20. किं-  
सा° Spr. 3439. RAGH. 9, 4. Spr. 807. 1313. 2899. VARĀH. BRH. S. 13, 4. 10.  
15. 16, 19. 39. कृषि° (= कृषीवत्) 33, 2. 68, 71. BHĀG. P. 1, 3, 13. BRAHMA-  
P. in LA. (III) 54, 16. PĀNĀV. 27, 9. 203, 2. HIT. 19, 2. धातुवाद° = का-  
रुधमिन् TRIK. 3, 3, 235. भार्या पररताम् so v. a. mit Andern buhlend Spr.  
2899. वैश्यरतः क्षत्रियः wohl so v. a. auf Kosten der Vaiçja lebend,

VI. Theil.

diese ausbeutend Verz. d. Oxf. H. 154, b, 10. — b) mit instr.: रममाणः  
स्त्रीभिर्वा यनिर्वा ज्ञातिभिर्वा KHĀND. Up. 8, 12, 3. कथाभिः MBh. 3, 58 (सह  
ist adv.). यथालब्धोपचार्यैः 12, 3876. R. 2, 36, 19. भोगैः 7, 39, 2. पौराङ्ग-  
नानां लोचनैः MBh. 28. KATHĀS. 44, 53. BHĀG. P. 3, 31, 32. 9, 18, 39. BHĀTT.  
6, 67. चित्रास्वादकथैर्भृत्यैरनायासितकार्मुकैः । ये रमते नृपास्तेषां रमते  
रिपवः श्रिया ॥ Spr. 912. R. 2, 36, 4. MĀRK. P. 23, 78. रमते पर्योषिता  
so v. a. pflegen der Liebe mit Spr. 764. रमते मातृभिः सुताः MBh. 6, 68.  
KATHĀS. 56, 292. VOP. 5, 30. BRAHMA-P. in LA. (III) 33, 11. सा च ग्राम-  
सौख्येन (so ist zu lesen) दण्डनायकेन तत्पुत्रेण च समं रमते HIT. 66, 7.  
मा रंस्था जीवितेन नः so v. a. spiele nicht mit unserem Leben BHĀTT. 6,  
15. स्वकर्मणीव रतः Gefallen findend an, zufrieden mit PĀNĀV. 228, 10.  
— c) mit infin.: वदते नहि वस्तुं मे स्वर्गं ऽपि रमते मनः R. GORR. 2, 21,  
15. — d) mit सह, सार्धम्, साकम् sich mit Jmd vergnügen und insbes.  
mit Jmd der Liebe pflegen; med. MBh. 3, 2253. 2640. R. 2, 27, 3. 31, 27.  
94, 18. R. GORR. 2, 27, 13. त्वमार्य सह वैदेह्या वनवासे ऽपि रंस्यसे 31, 21.  
KATHĀS. 18, 405. BHĀG. P. 9, 1, 25. MĀRK. P. 20, 6. 61, 55. MBh. 1, 3907.  
3, 2233. 13, 1466. KATHĀS. 37, 105. 42, 159. 43, 342. BRAHMA-P. in LA. (III)  
54, 9. PĀNĀV. 1, 10, 37. HIT. 63, 22. 86, 10. 110, 18. ed. JOHNS. 1394. SĀJ.  
zu RV. 1, 125, 1. रमते चोपकृतेन पुरुषाः पुरुषैः सह treiben Unzucht mit  
einander MBh. 8, 2115. act. R. GORR. 1, 63, 12. 3, 61, 34. 38. रत्तुम् R.  
SCHL. 2, 96, 9. 7, 31, 9. रत्त्वा KATHĀS. 64, 46. रमस्व सक्तितो मया MBh. 13,  
1465. — e) ohne weiteren Beisatz vergnügt sein, sich ergötzen: एका-  
की न रमते CAT. Br. 14, 4, 2, 4. KHĀND. Up. 8, 12, 5. MAITRAJUP. 2, 6. MBh.  
1, 981. 3905. 8061. 3, 1795. 4, 264. 403. R. 2, 55, 31. 91, 74. 3, 73, 17. 7,  
108, 29. RAGH. 9, 71. 14, 30. मम मनो रमते VIKR. 70, 21. न विना परिवा-  
देन रमते दुर्जिनो जनः Spr. 1438. 2983, v. l. KATHĀS. 34, 164. 52, 64.  
PRAB. 90, 13. BHĀG. P. 3, 23, 44. 4, 27, 1. 9, 19, 6. तुष्यति च रमति च  
BHĀG. 10, 9. MBh. 12, 7755. 13, 1276. रमामि कथयत्यास्ते दृढम् R. 3, 5, 3.  
15, 28. MĀRK. P. 51, 99. WEBER, RĀMAT. Up. 354. रम्यताम् impers. MBh.  
1, 7649. VIKR. 19, 1. Spr. 4341. रत्तुम् MĀRK. P. 20, 7. ČUK. in LA. (III)  
33, 3. रत्त vergnügt, froh BHĀG. P. 3, 23, 40. 10, 47, 8. Häufig in Verbindung  
mit einem loc. des Ortes: रममाणः पुरे रम्ये MBh. 1, 6412. 3, 1877. 13, 1427.  
3861. HARIV. 1576. R. 2, 34, 50. 54, 25. 36, 11. 60, 9. 94, 11. RAGH. 8, 94. Gtr.  
7, 22. यत्र रमाम्यहम् MBh. 1, 6449. R. 3, 79, 45. BHĀG. P. 5, 13, 18. रत-  
वानस्मि R. 2, 94, 16. रत्तुं प्रसीद शश्वन्मलयस्थलीषु RAGH. 6, 64. sich er-  
götzen so v. a. der Liebe pflegen: दंपत्योः रममाणयोः BHĀG. P. 3, 23, 46.  
एता हि रममाणस्तु वञ्चयस्तीह मानवान् MBh. 13, 2236. रममाणो चक्र-  
वाक्युगे MĀRK. P. 62, 10. मृगा रमते begatten sich P. 3, 1, 26. VĀRTI. 4.  
Sch. ततो निवेश्य बद्धां तां रत्तुमाश्लिष्यति स्म सः KATHĀS. 58, 96. बला-  
त्कारेण DAČAK. 32, 15. पुंसः स्त्रियाश्च रतयोः BHĀG. P. 10, 60, 38. — Vgl.  
रत, रत्तव्य, देवरत, निर्माणरत, महीरत, सुरत.

— caus. रमयति und रामयति VOP. 18, 23. अरोरमत्, रमयामकः ved.  
P. 3, 1, 42. 1) zum Stillstehen bringen: अयः RV. 5, 31, 8. 1, 165, 2. त्वं सुरो  
हरितौ रामयो नृन् 120, 13. 5, 52, 13. अरोरमदत्तमानं चिदेतौः 2, 38, 3. र-  
थम् 7, 32, 10. 50, 19. श्येनमप्यिनम् TS. 2, 4, 2, 1. पयन् 6, 3, 2. प्रज्ञाम्  
KĀTJ. ČR. 4, 14, 23. PĀNĀV. Br. 6, 7, 18. — 2) रमयति ergötzen, durch  
Befriedigung der Liebeslust ergötzen MBh. 1, 3905. 6064. 6071. 2, 133.  
305. 3, 1859. 4, 25. 12, 8812. 14, 2642. 15, 541. HARIV. 9904. R. 2, 48, 11

18